UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Drawing
Research Link - 163, Vol - XVI (8), October - 2017, Page No. 105-106
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

आधुनिक दौर की कला में साहित्य वर्णित कला परम्परा का योग

प्रस्तुत शोधपत्र, आधुनिक दौर की कला में साहित्य वर्णित कला परम्परा के योग पर आधारित है। 21वीं शताब्दी का यह दौर पूरी तरह से वैज्ञानिक समय कहा जा सकता है। कलाओं में भी भावों की अभिव्यक्ति के रुप, स्वरुप, रंग और प्रयोग बदल रहे हैं। चित्रकला की बात करें तो आज म्यूरल पेंटिंग, इंस्टॉलेशन, टेक्सटाईल डिजाइन, फैशन डिजाईनिंग, वस्तु सज्जा, ग्रॉफिक्स आदि नवीन विधाओं ने अपना स्थान बना लिया है। हमारे देश में भिन्न-भिन्न कलाकारों ने कला जगत के लिए एक प्रेरणा प्रदान की है। भारत की स्वतंत्र चित्रकला केवल एक कारीगर की तरह कार्य करना नहीं चाहती, सर्वप्रथम वह एक दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक की भांति काम करने का विचार करता है। अपने जीवन दर्शन को निर्धारित करता है और उसी के अनुसार अपनी साधना का एक लक्ष्य बनाता है। एक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक सिद्धांत निश्चित कर एक अभिनव शैली का आविष्कार करता है। इसलिए आज आधुनिक चित्रकला में अनेक प्रकार के नये-नये रुप सामने आ रहे हैं।

डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे

यूं तो आधुनिकता के कई रूप है। आज आधुनिकता को ऐसे विचार के रूप में स्वीकार किया जा रहा है, जिसका अर्थ सिर्फ फैशन हो गया है। सही अर्थ में मानसिकता में परिवर्तन को लेकर अर्थ है, आधुनिकता का सबसे प्रिय रूप है। सही मायने में आधुनिकता को एक खुलेपन से जोड़ने या जुड़ना होगा, जिसमें सबको स्वीकार करने का भाव हो, वही सबसे आधुनिक है।

आधुनिकता और वैचारिक परिवर्तन में जहाँ समाज ने अपने आपको बदला, कला भी उसी रूप में बदलती चली गयी। कला का प्रधान लक्ष्य सौन्दर्य की अनुमति है, चाहे वो किसी भी काल या समय में हो। अब कला में ''जैसा है वैसा'' की जगह ''जैसा–मन चाहे वैसा'' हो गया है और यह भाव कला के क्षेत्र में आधुनिकता के चलते एक अहम भूमिका निभा रहा है, जो फैशन में अधिकता से दिखाई देता है।

भारतीय चैतना में फैशन आधुनिकता से जुड़ा हुआ है। यह सब हमारी परम्परा है। अन्यथा कालीदास इतना अच्छा काव्य नहीं लिख पाते। सोलह–श्रंगार नहीं होते और न ही इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं, जिन्हें हम आधुनिक होने के अर्थ में स्वीकार कर सकते हैं।

हमारे पुराणों में केवल धार्मिक कथाएँ नहीं हैं, उनमें इतिहास, ज्ञान, विज्ञान के अपूर्व तथ्यों का भंडार भी सुरक्षित है। (विष्णु धर्मोतर पुराण में चित्रकला–लेखन–बुद्वीनाथ मालविय वर्ष – 1960)

पुराणों में प्रचलित भारत की कलाओं का भी वर्णन मिलता है। वास्तव में लौकिक या पारलौकिक जीवन के क्षेत्र में प्राचीन भारतीयों ने जो चिंतन किया था या जो उपलब्धि प्राप्त की थी, उन सबका हमारे पुराण एक प्रकार का विश्वकोश है। भिन्न–भिन्न पुराणों में भिन्न–भिन्न राजवंशों के वर्णन मिलते हैं, जिनसे समय अनुसार सौन्दर्य पूर्ण परम्परा के साथ समय की आधुनिकता की जानकारी प्राप्त होती है और यही प्रमाण बताते हैं कि हमारे साहित्यिक और कलात्मक इतिहास में वर्णित कला परंमराओं से फैशन का जुड़ाव किस तरह से रहा है।

परंतु वर्तमान समय में चित्रकारों की आँखों को आधुनिकता ने और पाश्चात्य चित्रकला ने चकाचौंध कर दिया है। जिससे प्रभावित होकर वे प्रतिकात्मक और लाक्षणिक ''चित्रकला'' की और अग्रसर हो रहे हैं। इसी को कहते हैं, ''विड प्राणायाम'' अर्थात सीधे नाक न पकड़कर उल्टे नाक पकड़ना। इसके परिणामस्वरूप वर्तमान में आधुनिक भारतीय चित्रकार परम्परागत प्राचीन भारतीय कला के महानगर को छोड़ कर नगर की तरफ दौड़ रहे हैं।

आधुनिक मशीनी युग तक पहुँचते–पहुँचते चित्रकला का रूप बहुत मिश्रित हो गया है और उन मिश्रित रूपों को आसानी से पहचानना कठिन हो गया है। इसीलिए आधुनिक कला से सारा समाज आनन्द नहीं ले पाता, ऐसी स्थिति में यह आवश्यसक हो गया है कि चित्रकला की परिभाषा फिर से प्रारंभ हो।

पाषाण युग में मनुष्य का मस्तिष्क सरल और सादा था। वह सोच भी नहीं सकता था, इसीलिये वह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए केवल सरल रूप ही बना पाता था, किन्तु आज मनुष्य का मस्तिष्क इतना जटिल और व्यस्त हो गया है कि उसे सादगी को स्वीकार करने में समय लगता है या वह आसानी से स्वीकार नहीं कर पाती है। वह उसे प्राकृतिक तात्पर्य में नहीं लिया जा सकता, सादगी का अपना एक सौन्दर्य होता है। जिस पर किसी की भी परछाई का प्रभाव नहीं होता, वह अपनी आप में सिद्ध होती है।

कला के अनेक रूप बने और बनते जा रहे हैं। भारत के अन्य प्राचीन कालों में शायद भारतीयों का सम्बंध संसार की ओर सभ्यताओं से इतना नहीं, जितना अब धीरे–धीरे होता जा रहा है। इसलिए भारतीय संस्कृति और कला दोनों पर उनका प्रभाव पड़ रहा है, प्राचीनकाल में उतना नहीं था। यदि आज ऐसी सुविधा है कि एक

विभागाध्यक्ष (चित्रकला विभाग), अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

देश की सभ्यता और कला पर अन्य देशों का प्रभाव पड़े, तो यह स्वभाविक है कि सभ्यपता का विकास आदान–प्रदान पर आधारित है। चित्रकला के क्षेत्र में या और किसी भी कला अथवा विज्ञान के क्षेत्र में प्रायः प्रत्येक सभ्य देश में एक ही प्रकार की धाराएँ चल पड़ती हैं। यही कारण है कि चित्रकला के क्षेत्र में नित नयी धाराएँ आ रही हैं और इन्हीं नई–नई धाराओं में एक धारा आधुनिक परिवेश को धारण किए हुए जो फैशन की है और इसका सीधा संबंध इस बात से भी है कि प्रत्येक युग में कला की शैलियों और विषय वस्तु में परिवर्तन आया है और इस परिवर्तन ने कला के स्वरूप को एक नया आयाम दिया है। जिसके कला स्व रूप आधुनिक परिवेश में फैशन की दुनिया में अपने आप को स्थान देने के लिए इन्हीं पुरातन शैलियों और विषयों को अपनी कला में स्थान दे रहे हैं। इन्हीं का उपयोग और प्रयोग अपने–अपने ढंग से कर रहे हैं। जैसे की अजन्ता के समय में जो धार्मिक चित्रण हुआ, उसके नमूने आज वस्त्रों पर अंकित हो रहे हैं। साथ ही उस समय की वेशभूषा को भी एक नये रूप में अपनाने की कोशिश की जा रही है। चाहे वो अंगवस्त्र हो, चाहे वह कैश विन्याए या इत्यादि। इन सभी को आज का कलाकार अपने अपने ढंग से इस्तेमाल कर रहा है। इसी तरह उस समय में बनी हुई, मूतियाँ पशु–पक्षी चित्रण, अलंकारिक आलेखनों को भी वर्तमान परिवेश में प्रयोग में लाया जा रहा है। ज्यामितीय या पारम्परिक आलेखनों को भी आज फैशन की दौड़ में शामिल किया गया है। जैसे की दीवारों पर जुताई के साथ, कपड़े पर चुड़ियों पर जुड़े की पिनों पर यहाँ तक की जूते और चप्पल पर भी इन कला के नमूनों को प्रयोग में लाया जा रहा है।

चित्रकला मनुष्य की उस रचना को कहते हैं, जिसमें वह अपनी कल्पना को किसी प्राकृतिक वस्तु या किसी रंग के माध्यम से किसी चित्र–पटल पर चित्रित या अंकित करता है और चित्रित करने वाले की कला भावना में एक मौलिक स्वतंत्रता समाहित होती है और यह एक देन होती है। जिसे विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया जाता है, परंतु अच्छी कला और सृजनशक्ति में समाहित कल्पना शक्ति पर आधारित होती है।

और इसीलिए मनुष्य इस बात की चेष्टा करने लगा, इस चेष्टा में एक प्रकार की शारीरिक संचालन शक्ति का प्रदर्शन परिलक्षित होता है, जिसे इशारों या संकेत की भाषा के नाम से उद्बोधित किया जाता है। इन इशारों से मनुष्य ने अपने आसपास व्यक्त करने के लिए इसका प्रयोग अपनी कला में किया और उसे सफलता मिली और दूसरों ने उसका अनुसरण करना आरंभ किया और इस तरह इशारों का एक निशान बन गया, भाषा बन गई।

इशारों की इस भाषा को रंग और रूप के साथ गीत और संगीत भी मिला और इस भाषा का रूप एक नये स्वरूप की दुनिया में परिवर्तित होकर प्रकट हुआ, जिसे विज्ञापन के नाम से जाना गया।

आज आधुनिक युग में विज्ञापन एक वृद्ध आवश्यकता बन गए हैं, जिनके बिना शायद बाजार और व्यवसाय दोनों अधूरे हैं। यहाँ वर्तमान में राजनीति और जन सामान्य से जुड़ी जीवन की सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को भी विज्ञापन से जोड़ा जा रहा है या यूं कहें कि जोड़ा जा चुका है और इन क्षेत्रों में कलाकार ने अपनी सृजनात्मजकता और कला–कौशल से नवीन प्रयोग कर जैसे, कोलाज, इन्स्टालेशन मिक्स मीडिया, डिजिटल आर्ट, फाईबर ग्लास, मीडिया आर्ट ग्लोइसाईन इत्यादि के अनेक उदाहरण प्रस्तुत हैं।

वर्तमान समय में आधुनिकता के चलते प्रचार–प्रसार के अनेक माध्यम ज्ञात हो गए हैं। जैसे रेडियो, टेलीविजन, मोबाईल, पत्र–पत्रिका, समाचार–पत्र इत्यादि इनमें विज्ञापन में जो लिखित सामग्री होती है। इसमें भी कला का बहुत बड़ा योगदान होता है। जैसे की जिस भी वस्तु या सामाग्री का प्रचार–प्रसार करना है। उसे सुन्दर नमूनों का रूप देकर सुन्दर लिखावट के साथ प्रस्तुत किया जाता है। जिसके लिए केलीग्रॉफी लेटर राइटिंग का प्रयोग कर अक्षरों को सुन्दर–सुन्दर रूप देकर सामग्री के साथ प्रस्तुत किया जाता है। पोस्टर विधा के साथ प्रचार–प्रसार को सहज और आसान बनाया जाता है, जिसमें संदेश और उपदेशों को कलात्मकता के साथ रंगों द्वारा दर्शाया जाता है।

ये सब आज एडवांस स्टेज पर पहुँच चुके हैं और इसका श्रेय कम्प्यूटर को जाता है। कम्प्यूटर ने भाषा और कला दोनों पर ही अपना प्रभाव डाला है, जो कि कला के क्षेत्र में चित्रों को मिक्स करने की तकनीक और कट–पेस्ट के द्वारा कई तरह के चित्रों को एक चित्र में प्रस्तुत करने, शब्दों को चयनित कर उनमें रंग भरना, पुराने से नया बनाना, यह सब कार्य कम्प्यूटर के द्वारा ही संभव है, परंतु यह भी अटल सत्य है कि वर्तमान में जो कार्य कम्प्यूटर के द्वारा किया जा रहा है। उसका आधार चित्रकला की एक विधा छापाकला है। इसके द्वारा रबर की शीट पर अक्षरों से लेकर चित्रों तक को (इन्ग्रेलव) कर यानी हल्की परत तक काटकर उभारने की कला के द्वारा किया जाता था, फिर रंगों की सहायता से अन्य सतह पर चित्र उभारा जाता था, जो कि प्ली नोकर के नाम से जानी जाने वाली कला है। विधा ने अपने अगले चरण में स्क्रिन प्रिंटिंग का रूप लिया और फिर इस तकनीक ने आज विज्ञान के अविष्कारित उपकरण कम्प्यूटर के रूप में अपना स्थान बना लिया है, जिसके द्वारा कम समय में सभी कार्य जो लीनो या रबर की शीट द्वारा या स्क्रिन प्रिंटिंग द्वारा किए जाते थे, वे इस कम्प्यूटर के द्वारा कम समय में तैयार किए जाते हैं।

आज वैज्ञानिक समय में भावों की अभिव्यक्ति में सृजनात्कता का बहुमुखी रूप नये–नये प्रयोग में देखने को मिलता है। आज म्यूरल पेंटिंग, इंस्टॉलेशन, टेक्सटाईल, डिजाइन, फैशन डिजाईनिंग, वस्तु सज्जा, ग्रॉफिक्स इत्यादि नवीन विधाओं ने अपना स्थान बना लिया है। इस तरह हमारे देश में भिन्न–भिन्न प्रायोगिक कलाकारों ने जगत के लिए एक प्रेरणा प्रस्तुत की है।

भारत की स्वतंत्र चित्रकला और चित्रकार केवल एक कारीगर की भांति कार्य नहीं करना चाहता, प्रस्तुत सर्वप्रथम वह एक दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक की भांति काम करने का विचार करता है। अपने जीवन दर्शन को निर्धारित करता है और उसी के अनुसार अपनी साधना का एक लक्ष्य बनाता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक सिद्धान्त निश्चित कर अभिनव शैली का आविष्कार करता है। वह केवल परम्परा का सहारा लेना नहीं चाहता, अपितु बुद्धि, विवेक और अनुसन्धान के बल पर कार्य करना चाहता है, इसीलिए आधुनिक चित्रकला में अनेक प्रकार के नये–नये रूप सामने आ रहे हैं।

<u>संदर्भ</u> :

*(1) अग्रवाल, आर.एन. : भारतीय चित्रकला की विवेचना। **(2)** कोलाज़ कला, अंक–जनवरी–2013. **(4)** शुक्ल, प्रो. रामचन्द्र : आधुनिक चित्रकला का इतिहास। **(5)** मालवीय, बद्रीनाथ : विष्णु धर्मोत्तर पुराण।*

❁❁

UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Referred Monthly Journal : Drawing
Research Link - 163, Vol - XVI (8), October - 2017, Page No. 105-106
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

आधुनिक दौर की कला में साहित्य वर्णित कला परम्परा का योग

प्रस्तुत शोधपत्र, आधुनिक दौर की कला में साहित्य वर्णित कला परम्परा के योग पर आधारित है। 21वीं शताब्दी का यह दौर पूरी तरह से वैज्ञानिक समय कहा जा सकता है। कलाओं में भी भावों की अभिव्यक्ति के रुप, स्वरुप, रंग और प्रयोग बदल रहे हैं। चित्रकला की बात करें तो आज म्यूरल पेंटिंग, इंस्टॉलेशन, टेक्सटाईल डिजाइन, फैशन डिजाईनिंग, वस्तु सज्जा, ग्रॉफिक्स आदि नवीन विधाओं ने अपना स्थान बना लिया है। हमारे देश में भिन्न-भिन्न कलाकारों ने कला जगत के लिए एक प्रेरणा प्रदान की है। भारत की स्वतंत्र चित्रकला केवल एक कारीगर की तरह कार्य करना नहीं चाहती, सर्वप्रथम वह एक दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक की भांति काम करने का विचार करता है। अपने जीवन दर्शन को निर्धारित करता है और उसी के अनुसार अपनी साधना का एक लक्ष्य बनाता है। एक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक सिद्धांत निश्चित कर एक अभिनव शैली का आविष्कार करता है। इसलिए आज आधुनिक चित्रकला में अनेक प्रकार के नये-नये रुप सामने आ रहे हैं।

डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे

यूं तो आधुनिकता के कई रूप है। आज आधुनिकता को ऐसे विचार के रूप में स्वीकार किया जा रहा है, जिसका अर्थ सिर्फ फैशन हो गया है। सही अर्थ में मानसिकता में परिर्वतन को लेकर अर्थ है, आधुनिकता का सबसे प्रिय रूप है। सही मायने में आधुनिकता को एक खुलेपन से जोड़ने या जुड़ना होगा, जिसमें सबको स्वीकार करने का भाव हो, वही सबसे आधुनिक है।

आधुनिकता और वैचारिक परिवर्तन में जहाँ समाज ने अपने आपको बदला, कला भी उसी रूप में बदलती चली गयी। कला का प्रधान लक्ष्य सौन्दर्य की अनुमति है, चाहे वो किसी भी काल या समय में हो। अब कला में ''जैसा है वैसा'' की जगह ''जैसा–मन चाहे वैसा'' हो गया है और यह भाव कला के क्षेत्र में आधुनिकता के चलते एक अहम भूमिका निभा रहा है, जो फैशन में अधिकता से दिखाई देता है।

भारतीय चैतना में फैशन आधुनिकता से जुड़ा हुआ है। यह सब हमारी परम्परा है। अन्यथा कालीदास इतना अच्छा काव्य नहीं लिख पाते। सोलह–श्रंगार नहीं होते और न ही इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं, जिन्हें हम आधुनिक होने के अर्थ में स्वीकार कर सकते हैं।

हमारे पुराणों में केवल धार्मिक कथाएँ नहीं हैं, उनमें इतिहास, ज्ञान, विज्ञान के अपूर्व तथ्यों का भंडार भी सुरक्षित है। (विष्णु धर्मोतर पुराण में चित्रकला–लेखन–बुद्वीनाथ मालविय वर्ष – 1960)

पुराणों में प्रचलित भारत की कलाओं का भी वर्णन मिलता है। वास्तव में लौकिक या पारलौकिक जीवन के क्षेत्र में प्राचीन भारतीयों ने जो चिंतन किया था या जो उपलब्धि प्राप्त की थी, उन सबका हमारे पुराण एक प्रकार का विश्वकोश है। भिन्न–भिन्न पुराणों में भिन्न–भिन्न राजवंशों के वर्णन मिलते हैं, जिनसे समय अनुसार सौन्दर्य पूर्ण परम्परा के साथ समय की आधुनिकता की जानकारी प्राप्त होती है और यही प्रमाण बताते हैं कि हमारे साहित्यिक और कलात्मक इतिहास में वर्णित कला परंमराओं से फैशन का जुड़ाव किस तरह से रहा है।

परंतु वर्तमान समय में चित्रकारों की आँखों को आधुनिकता ने और पाश्चात्य चित्रकला ने चकाचौंध कर दिया है। जिससे प्रभावित होकर वे प्रतिकात्मक और लाक्षणिक ''चित्रकला'' की और अग्रसर हो रहे हैं। इसी को कहते हैं, ''विड प्राणायाम'' अर्थात सीधे नाक न पकड़कर उल्टे नाक पकड़ना। इसके परिणामस्वरूप वर्तमान में आधुनिक भारतीय चित्रकार परम्परागत प्राचीन भारतीय कला के महानगर को छोड़ कर नगर की तरफ दौड़ रहे हैं।

आधुनिक मशीनी युग तक पहुँचते–पहुँचते चित्रकला का रूप बहुत मिश्रित हो गया है और उन मिश्रित रूपों को आसानी से पहचानना कठिन हो गया है। इसीलिए आधुनिक कला से सारा समाज आनन्द नहीं ले पाता, ऐसी स्थिति में यह आवश्यसक हो गया है कि चित्रकला की परिभाषा फिर से प्रारंभ हो।

पाषाण युग में मनुष्य का मस्तिष्क सरल और सादा था। वह सोच भी नहीं सकता था, इसीलिये वह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए केवल सरल रूप ही बना पाता था, किन्तु आज मनुष्य का मस्तिष्क इतना जटिल और व्यस्त हो गया है कि उसे सादगी को स्वीकार करने में समय लगता है या वह आसानी से स्वीकार नहीं कर पाती है। वह उसे प्राकृतिक तात्पर्य में नहीं लिया जा सकता, सादगी का अपना एक सौन्दर्य होता है। जिस पर किसी की भी परछाई का प्रभाव नहीं होता, वह अपनी आप में सिद्व होती है।

कला के अनेक रूप बने और बनते जा रहे हैं। भारत के अन्य प्राचीन कालों में शायद भारतीयों का सम्बंध संसार की ओर सभ्यताओं से इतना नहीं, जितना अब धीरे–धीरे होता जा रहा है। इसलिए भारतीय संस्कृति और कला दोनों पर उनका प्रभाव पड़ रहा है, प्राचीनकाल में उतना नहीं था। यदि आज ऐसी सुविधा है कि एक

विभागाध्यक्ष (चित्रकला विभाग), अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

देश की सभ्यता और कला पर अन्य देशों का प्रभाव पड़े, तो यह स्वभाविक है कि सभ्यपता का विकास आदान–प्रदान पर आधारित है। चित्रकला के क्षेत्र में या और किसी भी कला अथवा विज्ञान के क्षेत्र में प्रायः प्रत्येक सभ्य देश में एक ही प्रकार की धाराएँ चल पड़ती हैं। यही कारण है कि चित्रकला के क्षेत्र में नित नयी धाराएँ आ रही हैं और इन्हीं नई–नई धाराओं में एक धारा आधुनिक परिवेश को धारण किए हुए जो फैशन की है और इसका सीधा संबंध इस बात से भी है कि प्रत्येक युग में कला की शैलियों और विषय वस्तु में परिर्वतन आया है और इस परिवर्तन ने कला के स्वरूप को एक नया आयाम दिया है। जिसके कला स्व रूप आधुनिक परिवेश में फैशन की दुनिया में अपने आप को स्थान देने के लिए इन्हीं पुरातन शैलियों और विषयों को अपनी कला में स्थान दे रहे हैं। इन्हीं का उपयोग और प्रयोग अपने–अपने ढंग से कर रहे हैं। जैसे की अजन्ता के समय में जो धार्मिक चित्रण हुआ, उसके नमूने आज वस्त्रों पर अंकित हो रहे हैं। साथ ही उस समय की वेशभूषा को भी एक नये रूप में अपनाने की कोशिश की जा रही है। चाहे वो अंगवस्त्र हो, चाहे वह कैश विन्याए या इत्यादि। इन सभी को आज का कलाकार अपने अपने ढंग से इस्तेमाल कर रहा है। इसी तरह उस समय में बनी हुई, मूतियाँ पशु–पक्षी चित्रण, अलंकारिक आलेखनों को भी वर्तमान परिवेश में प्रयोग में लाया जा रहा है। ज्यामितीय या पारम्परिक आलेखनों को भी आज फैशन की दौड़ में शामिल किया गया है। जैसे की दीवारों पर जुताई के साथ, कपड़े पर चुड़ियों पर जुड़े की पिनों पर यहाँ तक की जूते और चप्पल पर भी इन कला के नमूनों को प्रयोग में लाया जा रहा है।

चित्रकला मनुष्य की उस रचना को कहते हैं, जिसमें वह अपनी कल्पना को किसी प्राकृतिक वस्तु या किसी रंग के माध्यम से किसी चित्र–पटल पर चित्रित या अंकित करता है और चित्रित करने वाले की कला भावना में एक मौलिक स्वतंत्रता समाहित होती है और यह एक देन होती है। जिसे विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया जाता है, परंतु अच्छी कला और सृजनशक्ति में समाहित कल्पना शक्ति पर आधारित होती है।

और इसीलिए मनुष्य इस बात की चेष्टा करने लगा, इस चेष्टा में एक प्रकार की शारीरिक संचालन शक्ति का प्रदर्शन परिलक्षित होता है, जिसे इशारों या संकेत की भाषा के नाम से उद्‌बोधित किया जाता है। इन इशारों से मनुष्य ने अपने आसपास व्यक्त करने के लिए इसका प्रयोग अपनी कला में किया और उसे सफलता मिली और दूसरों ने उसका अनुसरण करना आरंभ किया और इस तरह इशारों का एक निशान बन गया, भाषा बन गई।

इशारों की इस भाषा को रंग और रूप के साथ गीत और संगीत भी मिला और इस भाषा का रूप एक नये स्वरूप की दुनिया में परिवर्तित होकर प्रकट हुआ, जिसे विज्ञापन के नाम से जाना गया।

आज आधुनिक युग में विज्ञापन एक वृद्ध आवश्यकता बन गए हैं, जिनके बिना शायद बाजार और व्यवसाय दोनों अधूरे हैं। यहाँ वर्तमान में राजनीति और जन सामान्य से जुड़ी जीवन की सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को भी विज्ञापन से जोड़ा जा रहा है या यूं कहें कि जोड़ा जा चुका है और इन क्षेत्रों में कलाकार ने अपनी सृजनात्मजकता और कला–कौशल से नवीन प्रयोग कर जैसे, कोलाज, इन्स्टालेशन मिक्स मीडिया, डिजिटल आर्ट, फाईबर ग्लास, मीडिया आर्ट ग्लोइसाईन इत्यादि के अनेक उदाहरण प्रस्तुत हैं।

वर्तमान समय में आधुनिकता के चलते प्रचार–प्रसार के अनेक माध्यम ज्ञात हो गए हैं। जैसे रेडियो, टेलीविजन, मोबाईल, पत्र–पत्रिका, समाचार–पत्र इत्यादि इनमें विज्ञापन में जो लिखित सामग्री होती है। इसमें भी कला का बहुत बड़ा योगदान होता है। जैसे की जिस भी वस्तु या सामाग्री का प्रचार–प्रसार करना है। उसे सुन्दर नमूनों का रूप देकर सुन्दर लिखावट के साथ प्रस्तुत किया जाता है। जिसके लिए केलीग्रॉफी लेटर राइटिंग का प्रयोग कर अक्षरों को सुन्दर–सुन्दर रूप देकर सामग्री के साथ प्रस्तुत किया जाता है। पोस्टर विधा के साथ प्रचार–प्रसार को सहज और आसान बनाया जाता है, जिसमें संदेश और उपदेशों को कलात्मकता के साथ रंगों द्वारा दर्शाया जाता है।

ये सब आज एडवांस स्टेज पर पहुँच चुके हैं और इसका श्रेय कम्प्यूटर को जाता है। कम्प्यूटर ने भाषा और कला दोनों पर ही अपना प्रभाव डाला है, जो कि कला के क्षेत्र में चित्रों को मिक्स करने की तकनीक और कट–पेस्ट के द्वारा कई तरह के चित्रों को एक चित्र में प्रस्तुत करने, शब्दों को चयनित कर उनमें रंग भरना, पुराने से नया बनाना, यह सब कार्य कम्प्यूटर के द्वारा ही संभव है, परंतु यह भी अटल सत्य है कि वर्तमान में जो कार्य कम्प्यूटर के द्वारा किया जा रहा है। उसका आधार चित्रकला की एक विधा छापाकला है। इसके द्वारा रबर की शीट पर अक्षरों से लेकर चित्रों तक को (इन्ग्रेलव) कर यानी हल्की परत तक काटकर उभारने की कला के द्वारा किया जाता था, फिर रंगों की सहायता से अन्य सतह पर चित्र उभारा जाता था, जो कि प्ली नोकर के नाम से जानी जाने वाली कला है। विधा ने अपने अगले चरण में स्क्रिन प्रिंटिंग का रूप लिया और फिर इस तकनीक ने आज विज्ञान के अविष्कारित उपकरण कम्प्यूटर के रूप में अपना स्थान बना लिया है, जिसके द्वारा कम समय में सभी कार्य जो लीनो या रबर की शीट द्वारा या स्क्रिन प्रिटिंग द्वारा किए जाते थे, वे इस कम्प्यूटर के द्वारा कम समय में तैयार किए जाते हैं।

आज वैज्ञानिक समय में भावों की अभिव्यक्ति में सृजनात्कता का बहुमुखी रूप नये–नये प्रयोग में देखने को मिलता है। आज म्यूरल पेंटिंग, इंस्टॉलेशन, टेक्सटाईल, डिजाइन, फैशन डिजाईनिंग, वस्तु सज्जा, ग्रॉफिक्स इत्यादि नवीन विधाओं ने अपना स्थान बना लिया है। इस तरह हमारे देश में भिन्न–भिन्न प्रायोगिक कलाकारों ने जगत के लिए एक प्रेरणा प्रस्तुत की है।

भारत की स्वतंत्र चित्रकला और चित्रकार केवल एक कारीगर की भांति कार्य नहीं करना चाहता, प्रस्तुत सर्वप्रथम वह एक दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक की भांति काम करने का विचार करता है। अपने जीवन दर्शन को निर्धारित करता है और उसी के अनुसार अपनी साधना का एक लक्ष्य बनाता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक सिद्धान्त निश्चित कर अभिनव शैली का आविष्कार करता है। वह केवल परम्परा का सहारा लेना नहीं चाहता, अपितु बुद्धि, विवेक और अनुसन्धान के बल पर कार्य करना चाहता है, इसीलिए आधुनिक चित्रकला में अनेक प्रकार के नये–नये रूप सामने आ रहे हैं।

संदर्भ :

*(1) अग्रवाल, आर.एन. : भारतीय चित्रकला की विवेचना। **(2)** कोलाज़ कला, अंक–जनवरी–2013. **(4)** शुक्ल, प्रो. रामचन्द्र : आधुनिक चित्रकला का इतिहास। **(5)** मालवीय, बद्रीनाथ : विष्णु धर्मोत्तर पुराण।*

❁❁